18वीं शताब्दी में बीकानेर राज्य के मुग़लों के साथ सम्बन्ध

सुरेन्द्र सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

मुग़ल बादशाहों और बीकानेर के राठौड़ शासकों में जिस प्रकार का सम्बन्ध व पारस्परिक व्यवहार रहा उससे यह तथ्य स्थापित होता है कि बीकानेर राज्य का जन्म किसी बादशाह द्वारा दी गई किसी जागीर के रूप में नहीं हुआ। मुग़ल काल से पहले ही, एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में बीकानेर राज्य की स्थापना बीकाजी के असंख्य खतरों और गम्भीर कठिनाइयों के बावजूद अपने भुजबल और अदम्य शौर्य द्वारा की गई थी।[1] इस प्रकार अपने विजय के अधिकार से और प्रकृति के विरुद्ध भी एक दीर्घ व सतत संघर्ष करते हुए बीकानेर के शासक अपने इस परम्रागत अधिकार को कायम रख सके। मुग़ल साम्राज्य के इतिहास में बीकानेर के शासकों ने एक महत्वपूर्ण भाग अदा किया। उन्होंने अपना खून बहाकर स्वामीभक्ति का परिचय दिया और मुग़ल साम्राज्य के लिए सैनिक सेवाएं दी। उन शानदार गुणों के प्रदर्शन में जो किसी वंश को अपनी विजयों को स्थाई करने में सहायता करते हैं, वे किसी से कम नहीं थे। विभिन्न युद्धों और चढ़ाईयों में बीकानेर के शासकों ने अपना व्यापक अधिकार रखा।

बीकानेर का प्रथम शासक जो मुग़लों के सम्पर्क में आया, राव कल्याणमल था। वह बीकानेर का पाँचवा शासक था। उसे दो हजार का मनसब प्रदान किया गया। उसे यह मनसब 1570 ई. में मिला। ऐसा विश्वास किया जाता है कि हिन्दू राजाओं में केवल आमेर को छोड़कर बादशाही मनसब सबसे पहले बीकानेर के शासक को ही मिला था। साथ ही साथ मुग़ल बादशाह द्वारा बीकानेर के शासक को राजा की उपाधि भी मिल चुकी थी। अकबर के दरबार में केवल जयपुर के शासक को छोड़कर समस्त भारत के तत्कालीन हिन्दू राजाओं में बीकानेर के शासक का अधिक ऊँचा सम्मान था।[2] कई असवरों पर मुग़ल बादशाहों ने बीकानेर के शासकों को सर्वोच्च सम्मान प्रदान किये। कम से कम तीन अवसरों पर दिल्ली के बादशाहों ने बीकानेर शासको को 'माहि मरातिब'[3] का सम्मान दिया। इसके अतिरिक्त 'नालकी' सम्मान भी बीकानेर शासकों को प्रदान किया गया। इससे प्रतीत होता है कि बीकानेर शासकों के मुग़ल बादशाहों से अच्छे सम्बन्ध थे।

लेकिन 18वीं सदी में मुग़लों एवं बीकानेर के सम्बन्धों में काफी उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है। 1700 ई. में महाराजा स्वरूप सिंह का देहान्त हो गया तब बीकानेर की गद्दी पर सुजान सिंह बैठा।[4] उन दिनों बादशाह औरंगजेब दक्षिण में था। वहाँ से उसने सुजान सिंह को बुलाया। जिस पर सुजान सिंह अपने सरदारों के साथ बादशाह की सेवा में गया और दस वर्षों तक वहाँ बादशाह की सेवा में

रहा।[5] सन् 1676 ई. में जोधपुर शासक जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब उसके पुत्र अजीत सिंह को जोधपुर की गद्दी से वंचित कर दिया था। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद अजीत सिंह ने विद्रोह कर दिया। उसने जोधपुर के फौजदार जफरकुलीखां को वहाँ से हटा दिया और नगर पर अधिकार कर लिया।[6] सुजान सिंह के दक्षिण में होने का लाभ उठाकर सुजानसिंह की अनुपस्थिति में राज्य विस्तार करने का अच्छा अवसर देखकर अजीत सिंह ने फौज के साथ बीकानेर की तरफ प्रस्थान किया। लेकिन अन्त में उसे विवश होकर हट जाना पड़ा।[7] ऐसी परिस्थितियों को देखते हुए सुजान सिंह बीकानेर लौट आया। उसे विश्वास हो गया था कि डगमगाते हुए मुग़ल साम्राज्य की शक्ति के भरोसे कोई लाभ नहीं। क्योंकि औरंगजेब की मृत्यु के बाद क्षेत्रीय शक्तियों ने अपने आप को स्वतन्त्र करना शुरू कर दिया था। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बहादुरशाह बादशाह बना। उसने शाह आलम की उपाधि धारण की। उसका शासन पाँच साल तक चला और उसके बाद उसका पुत्र मुईनुद्दीन 'जहांदरशाह' के नाम से सिंहासन पर बैठा। लेकिन नौ महीने के भीतर ही उसके भतीजे फर्रुख़सियर ने उसे मरवा डाला। फर्रुख़सियर केवल नाम का बादशाह था। वास्तविक सत्ता महत्वकांक्षी सैय्यद बन्धुओं के हाथ में थी। उन्होंने जोधपुर के महाराज को अपने साथ मिला लिया और फर्रुख़सियर को मरवा डाला।[8] उसके बाद मुग़ल तख्त के दो उत्तराधिकारी रफीउद्दौला सात मास की अल्प अवधि में ही मर गये। उनके बाद बहादुरशाह का पोता और जहांदरशाह का पुत्र रोशन अख्तर मुहम्मदशाह के नाम से मुग़ल सिंहासन पर बैठा।[9]

जब दिल्ली में इस प्रकार निरन्तर होने वाले परिवर्तन हो रहे थे तो उस समय महाराजा सुजान सिंह अपने राज्य की लुटेरों से, जो केन्द्रीय सत्ता के कमजोर होने से स्वच्छंद हो गये थे, रक्षा करने में व्यस्त था। दिल्ली के डगमगाते तख्त पर मोहम्मदशाह अपने को अधिक सुरक्षित नहीं समझता था। लेकिन पहले के शासन के वर्षों में सुजानसिंह ने जो श्रेष्ठ व्यवहार किया उससे बादशाह को उसकी सच्ची मित्रता की आशा बंधी। अतः उसने उसे दिल्ली आने के लिए एक आवश्यक संदेश भेजा। लेकिन सुजान सिंह ने स्वयं राज्य से अनुपस्थित होकर खतरा उठाना उपयुक्त नहीं समझा और केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध बनाए रखने की दृष्टि से खवास आन्नदराम और जस्रूप को कुछ सेना के साथ दिल्ली भेजा। उसने मेहता पृथ्वीसिंह को एक टूकड़ी के साथ अजमेर की चौकी पर भेज दिया।[10] इस तरह से सुजान सिंह ने बीकानेर की रक्षा करते हुए मुग़लों के साथ सम्बन्ध बनाए रखे। सुजान सिंह की मृत्यु दिसम्बर 1735 ई. में हुई। उसके बाद उसका पुत्र जोरावर सिंह 1736 ई. में बीकानेर की गद्दी पर बैठा। बीकानेर जोधपुर की सीमा पर जोधपुर की सेना ने जिन स्थानों पर अधिकार कर लिया था। उसने उनको वहाँ से हटाने का कार्य किया।[11] उसके पूरे शासन काल में जोधपुर से टकराव की स्थिति बनी रही। जोरावर सिंह के समय तक मुग़ल शक्ति पूरी तरफ छिन्न–भिन हो चुकी थी और केवल एक छाया मात्र थी।

उसका नियन्त्रणकारी प्रभाव नहीं रह गया था। अतः आन्तरिक विद्रोहों व जोधपुर के बाह्य आक्रमणों के विरुध मुग़लों से किसी प्रकार की प्रभावकारी सहायता की आशा रखना मूर्खता थी। जोरावर सिंह इस स्थिति से भलीभांति परिचित था। अतः अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिए उसने मौका आते ही अपने पड़ोसियों को अपने पक्ष में कर लिया।

मोहम्मदशाह अब भी बीकानेर को मुग़ल तख्त का एक विश्वसनीय सहायक मानता था। अतः उसने चाहे जैसा हो मित्रता का परिचय देते हुए जोरावर सिंह को विश्वास दिलाया कि अभयसिंह (जोधपुर शासक) को बीकानेर पर अधिकार नहीं करने दिया जाएगा। पर जोरावर सिंह ने हाँसी और हिसार में गड़बड़ी करने वाले भट्टियों पर भी हमला करने की जरा सी हिचकिचाहट नहीं दिखाई। वहाँ उसे बादशाह की सेना से भी लड़ना पड़ा। इस प्रकार जोरावर सिंह मुग़लों के साथ कुछ खास सम्बन्ध नहीं थे।

मई 1746 ई. में जोरावर सिंह की निःसन्तान मृत्यु हो गयी। उसके छोटे भाई अभयसिंह के दो पुत्रों अमरसिंह और गजसिंह ने बीकानेर राजगद्दी का दावा किया। किन्तु गजसिंह अधिक योग्य होने के कारण सितम्बर में बीकानेर का चौदहवां शासक बना।[12]

बीकानेर राज्य पर महाराजा गजसिंह (1746–1788) के विराजमान होने के साथ ही यहाँ स्वायत्तशासी शासन के युग की शुरूआत हो गयी। इस समय मुग़ल बादशाह की सत्ता की की विवशता यह थी कि वह दूर के इलाकों पर नियन्त्रण नहीं रख पा रहा था। अहमदशाह के कमजोर शासन में हिसार का परगना अव्यवस्थति हो गया। अतः सन् 1752 ई. में उसने इसे गजसिंह को दे दिया। बीकानेर के महाराज ने इस परगने के प्रशासन के लिए अपने एक मन्त्री मेहता बख्तावर सिंह को नियुक्त किया।[13] कमजोर होती मुग़ल सत्ता में बादशाह की आज्ञा का उल्लघन होने लगा। गजसिंह को मुग़ल बादशाह ने एक आवश्यक सन्देश भेजकर अपने वजीर (मन्सूर अली खां सफदरजंग) से अपनी रक्षा के लिए बुलाया। वजीर ने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। गजसिंह लगभग साढ़े सात हजार सेना देकर हिसार से बख्तावर सिंह को तुरन्त भेजा। बादशाह ने बख्तावर सिंह का सम्मान किया। वह तुरन्त सहायता भेजने पर गजसिंह से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उस सात हजार और पाँच हजार सवार का मनसब प्रदान किया।[14] इसके साथ ही शानदार खिलअत और 'श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि' की उपाधी प्रदान की। यह उपाधी राज्य की मोहर पर अंकित की गई। महाराजा के ज्येष्ठ पुत्र को चार हजार जात और दो हजार सवार का मनसब दिया गया।[15] मेहता बख्तावर को राव की उपाधी दी गयी और एक खिलअत व चार हजार जात व एक हजार सवार का मनसब प्रदान किया गया। महाराजा की यह उपाधी अब सभी आदेश, शिलालेखों आदि में लिखी जाने लगी।[16] 1753 ई. में महाराजा गजसिंह को मुग़ल बादशाह की तरफ से अपने राज्य में अपने नाम के सिक्के चलाने का अधिकार

हांसिल हो गया।[17] इस समय सैद्धान्तिक रूप से बीकानेर मुग़लों के अधीन था, पर इस घटना के बाद बीकानेर शासक अब मुग़लों के सेवा से अपने आप को स्वतन्त्र समझने लगे तथा स्वयं अपना शासन संचालन करने लगे। तभी तो जब मुग़ल बादशाह उत्तम आलमगीर द्वितीय 1756 ई. में सिरसा आए तो उन्होंने गजसिंह को भी सिरसा आने के लिए लिखा। लेकिन गजसिंह ने न आने का निर्णय लिया।[18] यद्धपि इसी समय के आस पास जब जोधपुर के महाराज विजयसिंह ने बीकानेर से आर्थिक सहायता मांगी और गजसिंह ने उसे तुरन्त पचास हज़ार रूपए भेज दिए।[19] एक दूसरे अवसर पर विजयसिंह ने खींवसर के जोरावर सिंह को दबाने के लिए गजसिंह की सहायता मांगी। गजसिंह खींवसर गया और जोरावर सिंह को विजयसिंह की अधिनता स्वीकार कराने के लिए बाध्य किया।[20]

अतः जब मुग़ल साम्राज्य कमजोर हो गया और दिल्ली का बादशाह केवल प्रतीक मात्र रह गया। तब भी बीकानेर शासक गजसिंह ने मुग़ल बादशाह को दिए गए स्वामिभक्ति के वचन का पालन करते हुए कभी मुग़ल बादशाह के हितों के विरुद्ध कार्य करने की कोशिश नहीं की। इसी प्रकार मुग़ल बादशाह ने भी उसके प्रति सम्मान और विश्वास का दृष्टिकोण रखा। यद्यपि गजसिंह कभी दिल्ली के दरबार में नहीं गया।[21] गजसिंह की मृत्यु के बाद 1787 ई. में राजसिंह बीकानेर की गद्दी पर बैठा।[22] राजसिंह महाराज के रूप में केवल 21 दिन ही जीवित रहा। टॉड के अनुसार सूरत सिंह की माँ ने विश्वासघात करके जहर दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी।[23] इसके बाद राजसिंह के दो नाबालिक पुत्रों में से बड़ा प्रतापसिंह अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। लेकिन शीघ्र ही उसकी भी मृत्यु हो गयी।[24] इसके पश्चात् प्रतापसिंह के चाचा सूरत सिंह बीकानेर राज्य की गद्दी पर आरूढ़ हुए।[25] सूरतसिंह ने अपने राज्य की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए राज्य से बाहर के व्यापारियों को बीकानेर में बसने एवं स्वतन्त्र रूप से व्यापार करने के लिए आमन्त्रित किया[26] तथा राज्य की आमदनी बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रयास किये। बीकानेर राज्य पर होने वाले आक्रमणों से तथा अन्य विद्रोहों से यहाँ की राजनैतिक व आर्थिक स्थिति डांवाडोल होने लगी। इसी स्थिति के फलस्वरूप महाराज सूरतसिंह ने अंग्रेजों से 1818 ई. में सहायक संधि कर ली। तत्पश्चात् अंग्रेजी कम्पनी अधीन बीकानेर राज्य ने फिर एक केन्द्रीय सत्ता के संरक्षण का वरण किया।[27]

निष्कर्ष

इस प्रकार 18वीं शताब्दी में बीकानेर शासकों सम्बन्ध मुग़लों के साथ उतार–चढ़ाव वाले रहे। बीकानेर शासकों ने मुग़लों के विरुद्ध कोई विद्रोह नहीं किया। बल्कि जब बीकानेर पर बख्तसिंह ने आक्रमण कर दिया और जब बीकानेर पर ये काले बादल मंडरा रहे थे, तो भी बीकानेर के शासकों मुग़ल बादशाहों के प्रति उस समय भी अपनी स्वामीभक्ति का सच्चा प्रदर्शन किया। मुग़ल बादशाह इस समय पूर्णतः कमजोर हो चुके थे और समय के अनुसार अपने पड़ौसी राजाओं से अपना सम्बन्ध जोड़ लेते थे।

बीकानेर के शासक एक तरह से स्वतन्त्र से थे। मुग़ल बादशाहों के प्रति स्वामीभक्ति रखते हुए भी मौका पड़ने पर बीकानेर के शासक शाही सेना से लड़ने से कभी नहीं हिचकिचाया था। जैसे कि उनके हिसार पर आक्रमण से पता चलता है। लेकिन फिर भी मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम रखे गये। हम देखते हैं कि शाहआलम ने गजसिंह को मनसब, माही, मरातिब और उपाधी दी तथा उसके पुत्र राजसिंह और दीवान बख्तावर सिंह को भी मनसब प्रदान किया।

अभय सिंह द्वारा बीकानेर पर आक्रमण के समय मुहम्मदाशाह ने जोरावर सिंह को अपनी सहायता का विश्वास दिलाया। बीकानेर के शासकों ने भी अपनी ओर से कृतज्ञता का परिचय दिया। जब वजीर मन्सूरअली खां ने अहमदशाह के शासन के विरुद्ध विद्रोह किया और अहमदशाह ने सहायता मांगी तो गजसिंह ने तुरन्त मेहता बख्तावरसिंह के साथ एक सेना दिल्ली भेज दी।

संदर्भ सूची

[1] सिंह करणी, बीकानेर राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध, पृ. 134

[2] पाउलेट, गजेटियर ऑफ दी बीकानेर स्टेट, पृ. 270

[3] यह सम्मान 1, महाराज अनूप सिंह, 2, महाराज गजसिंह, 3, रतनसिंह को प्रदान किया गया।

[4] बीकानेर री ख्यात, सं. हुकमसिंह भाटी, पृ. 25, पाउलेट, पृ. 46

[5] टॉड कृत बीकानेर राज्य का इतिहास, सं. बलदेव प्रसाद मिश्र, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर, 1987, पृ. 22

[6] बीकानेर री ख्यात, पृ. 27, पाउलेट, पृ. 46

[7] सरकार, शोर्ट हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, पृ. 397

[8] श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 3, पृ. 841–42

[9] सिंह, करणी, बीकानेर राजघाराने के केन्द्रीय सत्ता के साथ सम्बन्ध, पृ. 217, बीकानेर री ख्यात, पृ. 60, पाउलेट, पृ. 47

[10] बीकानेर री ख्यात, पृ. 27–28, पाउलेट, पृ. 47

[11] बीकानेर री ख्यात, पृ. 32, श्यामलदास, भाग 2, पृ. 500–501, पाउलेट, पृ. 47

[12] नैणसी री ख्यात, भाग 2, पृ. 101, पाउलेट, पृ. 46

[13] बीकानेर री ख्यात, पृ. 71–72, पाउलेट, पृ. 61

[14] सिंह, करणी, बीकानेर राजघराने के केन्द्रीय सत्ता के साथ सम्बन्ध, पृ. 126

[15] वही, पृ. 126

[16] वही, पृ. 126

[17] सोहनलाल मुंशी, त्वारीख राजश्री बीकानेर, पृ. 18

[18] पाउलेट, पृ. 66, बीकानेर री ख्यात, पृ. 94

[19] बीकानेर री ख्यात, वही, पृ. 95–96

[20] वही, पृ. 96

[21] सिंह, करणी, बीकानेर के राजघराने के केन्द्रीय सत्ता के साथ सम्बन्ध, पृ. 131

[22] बीकानेर री ख्यात, पृ. 115

[23] टॉड कृत, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ. 23

[24] बीकानेर री ख्यात, पृ. 115

[25] वही, पृ. 116, टॉड, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ. 23

[26] बीकानेर री ख्यात, पृ. 122

[27] बीकानेर री ख्यात, पृ. 148